ज़िह्न में कुछ शे'र थे

अवधेश प्रताप सिंह 'संदल'

लोकोदय ग्रन्थमाला : 1446

ISBN 978-81-949287-7-5

ज़िह्न में कुछ शे'र थे
(ग़ज़ल-संग्रह)
अवधेश प्रताप सिंह 'संदल'

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स, दिल्ली-32

आवरण : महेश्वर

© श्रीमती रागिनी देवी दाँगी

ZIHN MEIN KUCH SHER THE
(Ghazal Collection)
By Avdhesh Pratap Singh 'Sandal'

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003
Ph. : 011-24698417, 24626467; 23241619 (Daryaganj)
Mob. : 9350536020; e-mail : bjnanpith@gmail.com
sales@jnanpith.net; website : www.jnanpith.net

First Edition : 2021
Price : Rs. 250

अनुक्रम

सामने हो समन्दर अगर राम जी	19
एक तेरा नाम ही शामो-सहर लिखता रहा	20
हमारी हैसियत कितनी है 'संदल' जानते हैं हम	21
बूट को धूल चटाने का हुनर है मुझमें	22
चल कहीं दूर चलें लेके कमण्डल बाबा	23
दर्द कुछ कम है मेरे ज़ख़्मों का	24
इस तरह से दर्द को धोका दिया	25
मुकम्मल दर्द का एहसास भी मुश्किल से मिलता है	26
होंट सिल तो लिये मगर साहिब	27
पल में शोला पल में शबनम की तरह	28
जरूरत से जियादा तो शराफ़त भी नहीं अच्छी	29
लगे जैसे कि हूँ अंजान घर में	30
देर कितनी कहे में लगती है	31
बताओ क्या छुपाना चाहते हो मुस्कुराहट से	32
जता जता के वो हक़ प्यार में झगड़ता है	33
रो'ब, रुत्बा, नाम, क़द, औक़ात, ओ़हदा, हैसियत	34
कोई इक ऐसा तरीक़ा तो निकाला जाये	35
गँवा बैठे हर इक बाज़ी हमीं नाहक़ शराफ़त में	36
गला पकड़ने से पहले दुलार करता है	37
जब हुआ दिल उदास शाम हुए	38
ख़ुदा का शुक्र है सब ख़ैरियत है	39
अंजली, पायल, नताशा, पल्लवी, काजल, प्रिया	40

तुम्हीं ने तो मुहब्बत है सिखायी 41
ज़िंदगी इम्तिहान है भैया 42
मेरे दुश्मन बताते हैं मुझे ये कान में आकर 43
चार दिन की ये ज़िंदगानी है 44
जो प्यार में हुए थे जुदा इस जहान में 45
मुहब्बत में बिना सोचे विचारे चल रही है 46
मिल जाये प्यार में ये सिला चाहता हूँ मैं 47
इस कहानी का नया पहलू दिखाई दे रहा है 48
भला घर के दरो-दीवार क्यों दिन रात देखें हम 49
हमारी सोच गूँगी हो गयी है 50
इस सियासत ने जब घोल दीं तल्खियाँ 51
यूँ प्यार में उमीद ज़ियादा तो नहीं हैं 52
बेसबब बेचैनियाँ हैं क्यों समझ आता नहीं 53
मैं जितना अज़्म रखता हूँ बस उतनी बात रखता हूँ 54
आह कब तक भला कोई भरता 55
बढ़ गयीं बेचैनियाँ क्यों पास आने से तेरे 56
इस बुढ़ापे में ज़ियादा कुछ नज़र आता नहीं 57
मैसाज़ तो हैं लेकिन मैनोश हम नहीं हैं 58
ख़्वाब हम भी तो चंद रखते हैं 59
काम ऐसा भी क्या किया उसने 60
लोग लब पे तो दाद रखते हैं 61
थी ज़ीस्त में इतनी ही मुहब्बत की दास्ताँ 62
अना का ख़ून पल पल कर रहे हैं 63
जी न पायेंगे बेहयाई से 64
हमें सूली चढ़ाया जा रहा है 65
क्या काशी है क्या प्रयाग समझाओ पंडित 66
झूट का चलता है सिक्का क्या तुम्हें दिखता नहीं 67
तुम्हारे साथ बैठा हूँ यहाँ पर 68
सफ़र पे मैं निकल पैदल ही आया 69
चल रहे हैं हम मुसल्सल नौकरी की चाह में 70

ये नामुम्किन भी मुम्किन दिख रहा है 71
लगे कि जैसे हो नज़्म कोई, ग़ज़ल सी ताज़ातरीन तुम हो 72
लाश ये किसकी पड़ी है कौन जाने 73
ये ज़िंदगी है भली कुछ ख़राब होकर भी 74
उसने सुनी थीं ग़ौर से बातें मेरी मगर 75
कोई पैग़ाम क्यों नहीं देते 76
जातिपाँति मज़्हब की बातें क्या करना 77
क्या घुट के मर जाना अच्छा 78
ज़िंदगी में जब मुझे शुह्रत हुई हासिल नहीं 79
मेरी शख़्सियत अब जला दी गयी 80
न तू कोई फ़रिश्ता है न कोई देवता है तू 81
भरे हुये हैं सभी शे'र ग़म से शाइर के 82
झूट जो भी दलील होती है 83
दर्द में तेरा सहारा मिल गया 84
कोई पुख़्ता ठिकाना चाहता हूँ 85
रब चाहे तो ज़र्रे को चट्टान बना दे 86
क्या तरीक़ा है तुम्हारे बात करने का 87
ये अँधेरे न कभी नूर को खा पायेंगे 88
भूक से मज्बूर निकले इस कड़कती धूप में 89
कहीं भी रख दिये पत्थर किसी उल्लू के पट्ठे ने 90
क़ैद से दो चार पल को अब ज़मानत चाहिए 91
सात जनम तक साथ निभाने का था वा'दा टूट गया 92
भुला देता हूँ मैं तुमको मगर तुम साथ होती हो 93
मैं अगर दूर तुमसे जाता हूँ 94
या तो हम ही हो जायेंगे ठोकर खाकर चकनाचूर 95
मिला है ग़म हमें फिर भी ख़ुशी है 96
मुहब्बत में सनम रूठा बड़ा दिलचस्प क़िस्सा है 97
लाऊँ राशन पानी कैसे 98
रख न पाये जो वज़्न फ़ाइल पर 99

बोलकर सच पड़ो न मुश्किल में	100
पीठ पीछे क्यों बुराई कर रहे हो	101
आज उन तक ख़बर गयी मेरी	102
देश की ख़ातिर मरे कुछ लोग हैं	103
हमारी है बुरी हालत समय का फेर है भैया	104
अगर जाना तो जाना इस तरह से	105
हर सफ़र में साथ है जो हमसफ़र वो कौन है	106
आजकल यूँ भी जी रहा हूँ मैं	107
कभी गुस्सा हमारी जिस ख़ता पे वो रहे हैं	108
वक़्त कहाँ मिल पाता है	109
शिकायत लिखाने जो थाने चले हैं	110
तुम्हारे और मेरे बीच दूरी	111

₹: 250.00

3437-1

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली - 110 003

संस्थापक : स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन, स्व. श्रीमती रमा जैन